मैं से हम की ओर ..... चैताली

नर्मदा मुम्बई विजिट 17 फरवरी से 24 फरवरी 2007
यू एन डी पी प्रोजेक्ट के तहत साझा मंच के नेतृत्व में .....चैताली

NGO world के बारे में ज्यादा पता नहीं था। अभी भी शायद नहीं है। जागोरी के साथ जुड़ी हूं ज़्यादा दिन नहीं हुए हैं। फिर भी ऐसा लगता है बहुत दिनों से उनके साथ हूँ। क्योंकि लोगों ने मुझे जल्दी ही अपना बना लिया है। यह उनकी खासियत है। जब साझा मंच के साथ जुड़ी तो मंच से जुड़ने के मायने समझ में नहीं आ रहे थे। उन लोगो के साथ अपने आपको जोड़ नहीं पा रही थी। अपने आप को दरवाजे के बाहर ही देख रही थी। जब विजिट के बारे में जानकारी मिली तो उस समय मेरे ज़हन में यही आ रहा था कि हम वहां जाकर क्या करेंगे? ट्रेन में कुछ लोगों को छोड़कर किसी को अपने आपसे मिला नहीं पा रही थी। धीरे धीरे खंडवा का सफर शुरू हुआ। ट्रक ने शायद हम सबको मिलाने के जिम्मा ले रखा था। शायद ऐसा अनुभुव मेरे अकेले का नहीं था। पुराने साथियों ने माहौल को सहज बनाने का बीड़ा उठाया।

मेरे लिये 30 लोगो के साथ दिन रात रहना एक अलग अनुभव है। अकेले रहने की आदि जो हो चुकि थी। फिर भी अच्छा लग रहा था। कुछ खास दोस्त भी बने ट्रक में। उम्र दोस्ती के बीच नहीं आई।

साथ ही साथ नर्मदा बचाओ आंदोलन को करीब से देखने का मौका मिला। आज तक अखबार और टी.वी में देखते और सुनते आयी थी। लोगों की भावनाओं को छुने का मौका मिला। अपना घर डुब गया तो क्या! किसी और का घर डुबने नहीं देने की शपथ के साथ बड़े ही जोश के साथ संघर्ष करने में लगे हुए थे।

इन्सान यहां मैं से हम बन चुका है। कुछ जगह में लोगों का भरोसा कम हो चुका है। फिर भी यह सच है कि यहां संस्था से संगठन बना है। भावना के साथ दिमाग और मानवश्रम जुड़कर ताकत के

रूप में सामने आया है। यह सच है कि आज यह स्थान एक लम्बी लड़ाई का नतीज़ा है। हार भी उस ताकत को कमजोर नहीं कर पाई है। खासतौर पर औरतों की ताकत बड़ते नजर आ रहा थी।

विपक्ष उन ताकतों को तोड़ने के लिए तरकीब अपनाते जा रहा है। तोड़ना मुशकिल है। हम यह माने या न माने मर्द कमज़ोर होता है। उसको तोड़ना भी आसान है। जब औरत अपने रूप में आती है, तब बह दुर्गा बन जाती है। उसकी इस ताकत को तोड़ना असुरों के बस की बात नहीं है।

दिल्ली में हम जब फिल्ड में जाते है तब कितना कुछ सोचते है। कितना दुर होगा, आखरी बस चली तो नहीं जाएगा? पर वहां फिल्ड दिल्ली जैसा आसान नहीं है। बहुत दूरियां तय करनी पड़ती है। फिर भी चेहरे में थकान नहीं है। राम कुंवर को देखकर मुझे ऐसा ही महसूस हुआ। सुबह चार बजे घर पहूंच कर जब सब थक कर सो गये, तब राम कुंवर चाय और कुछ लोगों के लिए नहाने का पानी गरम करने में लग गयी थी।

सारी रात ट्रक में बिताना भी आपने आप में एक खास अनुभव है। सारी सारी रात जागकर बिताना, उसी में से ही कुछ लोगो का सो जाना। मुझे महसुस हो रहा था कि मैं उन सोनेवालों में से ज्यादा हिम्मतवाली हूं। यह मुझे पता नहीं था। मुझे पता नहीं था कि मैं भी एडजस्टमेंट करना जानती हूं। सबको साथ लेकर चलना मुझे भी आता है। अपने आपको जानने का यह मौका मुझे मिला, इसलिए मैं सांझा मंच और कल्याणी दि को शुक्रिया कह रही थी मन ही मन में। डेम देखा तो शरीर में एक लहर सी उठी । कितना पानी, इतना गांव को डुबोया है। पुश्तों के जमीन छोड़कर लोग आज किस हालत में है! एक वर्ग अपने फायदे के लिए इतना नीचे गिर सकता है! कृषि प्रधान भारत में जब कृषकों के पास जमीन नही तो किस के पास क्या बचा। यह एक बहुत बड़ा सवाल है।

गांव में रात कें समय टिम टिम रोशनी में खाना खाने का भी अलग अनुभव है। उन दो दिनों में ही राम कुवर हमारे कितनी पास हो गयी थी। 30 लोगो के लिए थोड़ा थोड.ा गन्ने का रस ले आयी, यह मन छु जानेवाला पल है। ऐसी बहुत सी हमारी साथी थे, जिन्हे कोइ फर्क नहीं पड.ता था।

उस प्यार के बदले राम कुवर के उपर। गुस्सा बरसाया गया। अभी भी हमारे अंदर कितनी व्यवहारिक दिक्कते हैं। शायद अभी तक हम मैं से हम नहीं बन पाये, पर निकले समाज और देश को सुधारने। अजिब बात है। अभी तक हम दुसरे से काम करवाना ज़्यादा पसंद करते है। खुद काम करने में ज़्यादा विश्वास नहीं रखते है। मेरा काम हो गया तो सबका काम हो जाना चाहिए। 30 लोगो के ग्रुप में ही इतना भेद, तो सोचिए करोड.ो के बीच कितना भेद होगा। फिर भी हम एकसाथ है। एक दुसरे की अच्छाई और बुराई को जानने के बावजुद हम एक साथ थे,। गानो गाये, एक साथ खाना खाया और मजा किया। मैं से हम बनना शायद शुरू हो चुका है। खंडवा से मुम्बइे के रास्ते में ग्रुप और मजबुत हुआ। एक दुसरे को जानने का और मौका मिला। और सहज हुये हम।

मुम्बइे ट्रिप में राजनैतिक रंग ज़्यादा था। डी वाई एफ वाई के साथ मुम्बइे visit का शुरूआत हुई। मुम्बई का मास्टर प्लान दिल्ली में क्या रंग लायेगा उसका एक ड्राप्ट सामने आया। पर यह सोच हमेशा दिमाग में आती गई कि हम जिस वर्ग के साथ दिल्ली में काम करते हैं, क्या उस वर्ग को हम मुम्बई में देख पाए? सुना है कि मुम्बइे में गरीबी रेखा से नीचे रहनेवाले लोगों के सिर पर छत नहीं है। मुम्बइे के जिस सपने को हमने देखा वह कितना भी सुंदर क्यों ना हो पर उसमें दिखावट ही दिखावट है। कुछ दिन बाद यह सुंदर नज़ारा टुट जाएगा। जब उन परिवारों के सदस्यों की संख्या बढे.गी।

शाम को समुंदर के किनारे इतने लोगों के बीच अपने आपको अकेला पाया। महसुस हुआ कि कल फिर हम अपनी अपनी जगह चले जाऐंगे। काम के अलावा कोइे किसी से संपर्क नहीं करेगा, यह सोचकर मन खराब हो गया। बस में आफाक की एक बात याद आ रही है। जब हम सबको जानने लगे, तब तक ट्रिप ही खतम हो चुका था। घर पहुंचने पर लगा कि chinmayi मुझे नहीं भुली हैं। अब मुझे अहसास हो रहा है कि उसके साथ मेरी दोस्ती हो चुकी है। चलो एक दोस्त तो

मिला! आखिर साझा मंच में जुड. ही गयी। एक दुसरे को जानने का सफर शुरू हो चुका है। ट्रिप खतम हुआ तो क्या!